बनारस घराने की सांगीतिक परंपराः एक संक्षिप्त अवलोकन

गरुण मिश्र
पीएच. डी. शोधछात्र
संगीत विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली

सार

भारतवर्ष के प्राचीनतम नगरों में से एक काशी, अपनी महान आध्यात्मिक पृष्ठभूमि एवं विशाल संगीतिक परंपरा के कारण हमेशा से ही आकर्षण का केंद्र रहा है। यहाँ का संगीत अनेक सौंदर्यात्मक पहलुओं को अपने आंचल में समेटे हुए है, न केवल गायन अपितु वादन एवं नृत्य के क्षेत्र में भी भारतीय संस्कृति के विभिन्न रंग, बनारस घराने की संगीतिक परंपरा में परिलक्षित होते हैं।

उद्देश्यः बचपन से ही मेरी संगीतिक शिक्षा बनारस घराने की ख़याल शैली के अंतर्गत निरंतर रूप में हो रही है। यहां की उत्कृष्ट साहित्यिक एवं संगीतिक रचनाएं और उनके कहन की विधि हमेशा से ही मुझे आकर्षित करती रही है। इसके अतिरिक्त बनारस घराने की ख़याल गायकी की बारीकियों का अध्ययन कर अपने संगीतिक ज्ञान कोष में वृद्धि करने एवं उसे संगीत जगत के समक्ष प्रस्तुत करने के उद्देश्य से ही मैंने उक्त विषय का चयन अपने शोध प्रपत्र हेतु किया है।

शोध सामग्रीः प्रस्तुत शोध–प्रपत्र में प्रस्तुत जानकारी को विभिन्न विद्वानों से साक्षात्कार, विभिन्न पुस्तकों के अध्ययन एवं अवलोकन विधि के आधार पर एकत्रित किया गया है।

संगीत की तीनों विधाओं में समानाधिकार रखने वाले इस घराने को सम्वृद्ध करने के लिये यहाँ के महान संगीतज्ञों ने अपना अमूल्य योगदान दिया है। भविष्य में भी हमें प्रत्येक स्तर पर इस घराने की परम्परा को आगे बढ़ाने का समुचित प्रयास करना चाहिये।

संकेत शब्द

बनारस घराना, शैली, परम्परा, ख़याल गायकी, प्रस्तुतिकरण

साहित्य, कला, संस्कृति, धर्म, दर्शन एवं संगीत इत्यादि अनेक क्षेत्रों में काशी का महत्त्वपूर्ण स्थान है। काशी जिसे हम बनारस, वाराणसी इत्यादि नामों से भी जानते हैं। यह भारत वर्ष के प्राचीनतम् नगरों में से एक है। विश्व के अन्य प्राचीनतम् नगरों जेरुसलम, एथेंस तथा पीकिंग से इसकी तुलना की जाती है। काशी की महिमा का वर्णन अनेक पुराणों, उपनिषदों, वेदों एवं महाकाव्यों में प्राप्त होता है। बनारस शहर गंगा नदी के बाएँ तट पर अर्धचन्द्राकार अवस्थित है।

संगीत के सदंर्भ में यदि हम बनारस की बात करें तो यहाँ भारतीय शास्त्रीय संगीत की लगभग समस्त विधाओं के अनेक सिद्धहस्त कलाकारों का जन्म हुआ, तथा उन्होंने अपने संगीत साधना से इस धरा को अभिसिंचित कर विश्व पटल पर ख्याति अर्जित की। बनारस घराने की संगीत परम्परा लगभग तीन–चार सौ वर्ष प्राचीन मानी जाती है। बनारस घराने की गायन शैलियों में ध्रुपद, धमार, ख़याल, तराना, त्रिवट, चतुरंग से लेकर ठुमरी, दादरा, टप्पा, टपख्याल, टप्प तराना के साथ ही साथ होली, कजरी, चैती, घाटो, पूर्वी तथा बारहमासा इत्यादि अनेक लोक शैलियों के सरस गायन–वादन की समृद्ध परम्परा रही है। गायन के अतिरिक्त वादन जैसे– वीणा, सितार, सारंगी, वायलिन, सन्तूर, सरोद इत्यादि तंत्री वाद्यों तथा मृदंग, पखावज, तबला इत्यादि अवनद्य वाद्यों तथा शहनाई, बाँसुरी, हारमोनियम इत्यादि सुषिर वाद्यों तथा जलतरंग, काष्ठतरंग इत्यादि घन वाद्यों का भी दक्षतापूर्वक वादन हमें देखने को मिलता है। गायन–वादन की ही भाँति बनारस घराने की कथक नृत्य परम्परा भी लोकप्रिय एवं प्रतिष्ठा के शीर्ष पर विराजमान है। इस प्रकार बनारस घराने के संगीत की व्यापकता एवं अनूठेपन का अनुमान लगाया जा सकता है। गायन, वादन तथा नृत्य तीनों विधाओं में बनारस घराने के अनगिनत संगीतज्ञों ने अपने–अपने जीवन काल में संगीत जगत में अपना महत्त्वपूर्ण योगदान दिया है तथा इस परम्परा के संवाहक आज भी इस सांगीतिक यात्रा को आगे बढ़ा रहे हैं। इलाहाबाद विश्वविद्यालय के संगीत विभाग के प्रोफेसर पद पर कार्यरत पं. विद्याधर मिश्र जी के अनुसार बनारस के कुछ श्रेष्ठ कलाकारों के नाम इस प्रकार हैं– "पं. शिवदास– प्रयाग जी, पं. जगदीप मिश्र जी, पं. प्रसिद्धू– मनोहर जी, पं. प्रताप महाराज जी, पं. मिठाई लाल मिश्र जी, पं. राम सहाय जी, पं. जयकरन मिश्र जी, पं. राम सराय जी, पं. शिव सहाय–रामसेवक मिश्र जी, पं. भैरो सहाय जी, पं. बड़े गणेश मिश्र जी, पं. शम्भू नाथ मिश्र जी, पं. दरगाही मिश्र जी, पं. ठाकुर प्रसाद मिश्र जी, पं. सुमेरु मिश्र जी, पं. शिवा–पशुपति मिश्र जी, पं. बिहारी मिश्र जी, पं. ननकू लाल मिश्र जी, पं. छोटे रामदास जी, उ. मौजुद्दीन खाँ, पं. बीरु मिश्र जी, पं. बाचा मिश्र जी, पं. कंठे महाराज, पं. हरिशंकर मिश्र जी, पं. दाऊजी मिश्र जी, पं. अनोखे लाल मिश्र जी, पं. श्रीचन्द्र मिश्र जी, पं. गोपाल मिश्र जी, पं. हनुमान मिश्र जी, पं. बैजनाथ मिश्र जी, सितारा देवी जी, पं. किशन महाराज जी, रसूलन बेगम जी, पं. शारदा सहाय जी, पं. रंगनाथ मिश्र जी, सिद्धेश्वरी देवी जी, बागेश्वरी देवी जी, पं. जालपा मिश्र जी, पं. अमरनाथ–पशुपति नाथ जी, उस्ताद बिस्मिल्ला खाँ जी, पं. गणेश प्रसाद मिश्र जी, गिरिजा देवी जी, पं. छन्नूलाल मिश्र जी एवं पं. राजन–साजन मिश्र जी इत्यादि।"[4]

बनारस घराने के अंतर्गत सम्मिलित परम्पराएँ

बनारस घराने में गायन की अनेक परम्पराएँ हमें देखने को मिलती हैं। जिनका संक्षिप्त परिचय इस प्रकार है–

- **पियरी परम्परा–** पं. दिलाराम मिश्र जी इस घराने के प्रवर्तक माने जाते हैं। 16वीं सदी के पूर्वार्द्ध में आपका समय माना जा सकता है। आपने राधावल्लभ संप्रदाय के विद्वान संगीतज्ञ श्री हित हरिवंश जी से लगभग पैतीस वर्षों तक वृंदावन में रहकर छंद, प्रबन्ध, ध्रुपद, विष्णुपद आदि गायन शैलियों की उत्कृष्ट शिक्षा प्राप्त की तथा 'सेवक' उपनाम से ध्रुपद की अनगिनत रचनाएँ

की। पं. दिलाराम मिश्र जी के वंशजों में प्रसिद्धू–मनोहर जी, पं. ठाकुर दयाल मिश्र जी ने इस घराने को ख़याल, टप्पा, होरी इत्यादि शैलियों से भी समृद्ध किया।

- **तेलियाना परम्परा–** बनारस के तेलियाना नामक स्थान को वर्तमान में 'शिवाला' के नाम से जानते हैं। उस्ताद सादिक अली जो कि मुगल शासक बहादुर शाह ज़फर के दरबारी कलावन्त थे, ब्रिटिश साम्राज्य स्थापित होने के बाद अपने परिवार समेत बनारस आ बसे तथा बाद में काशी नरेश के दरबार में कलावन्त नियुक्त किये गये। इस घराने के उस्ताद आशिक अली खाँ तक ध्रुपद, ख़याल, टप्पा आदि की गायकी एवं बीन वादन की कला विद्यमान थी।

- **पं. जगदीप मिश्र जी की परम्परा–** बनारस ठुमरी गायन शैली के अग्रणी गायक के रूप में आपका नाम आता है। पं. जगदीप मिश्र जी मूलतः आजमगढ़ जिले के हरिहरपुर ग्राम के निवासी थे। आज भी इस हरिहरपुर गाँव में संगीत की समृद्ध परम्परा विद्यमान है। कालान्तर में पं. जगदीप मिश्र जी बनारस के कबीर चौरा मुहल्ले में आ बसे। गायन की अनेक शैलियों के ज्ञाता होने के साथ–साथ नृत्य कला के भी विद्वान थे। ठुमरी गायन शैली में आपको विशेषाधिकार प्राप्त था।

- **पं. शिवदास–प्रयाग जी की परम्परा –** आप दोनों भाइयों ने सांगीतिक शिक्षा अपने मामा पं. राम प्रसाद मिश्र जी से प्राप्त की। बाद में आपको काशी नरेश के दरबारी कलावन्त उस्ताद मुहम्मद अली से भी संगीत शिक्षण प्राप्त हुआ। शिवदास जी गायन के साथ–साथ बीन, सितार, सुरसिंगार, सरोद इत्यादि वाद्यों के कुशल वादक भी थे। इस घराने के अनुपम गायक के रूप में पं. मिठाई लाल मिश्र जी का नाम आता है। पं. मिठाई लाल जी, पं. प्रयाग मिश्र जी के सुयोग्य शिष्य एवं पुत्र थे। इस घराने की वंश परम्परा एवं शिष्य परम्परा में सारंगी, बीन तथा गायन आदि के अनेक उत्कृष्ट कलाकार हुए।

- **पं. जयकरन मिश्र जी की परम्परा –** बेतिया दरबार के ध्रुपदाचार्य श्री जयकरन मिश्र, मूलतः बेतिया के निवासी थे। बाद में बेतिया से काशी आ बसे। इनके शिष्यों में प्रसिद्ध वाग्गेयकार पं. बड़े रामदास जी, सुप्रसिद्ध ध्रुपद गायक पं. वेणीमाधव भट्ट तथा पं. भोलानाथ भट्ट आदि महान संगीतज्ञों का नाम आता है। पं. बड़े रामदास जी रिश्ते में आपके दामाद थे।

- **पं. ठाकुर प्रसाद मिश्र जी की परम्परा –** सन् 1848 ई. में जन्में पं. ठाकुर प्रसाद जी को संगीत शिक्षा पियरी घराने के गायक पं. प्रसिद्धू मिश्र जी के सुपुत्र शिव सहाय मिश्र से प्राप्त हुई। ठाकुर प्रसाद मिश्र जी टप्पा गायन शैली के विलक्षण गायक होने के साथ–साथ वीणा एवं सारंगी वादक भी थे। पं. छोटे रामदास जी, हुस्नाबाई इत्यादि गायकों को आपने गायन की शिक्षा दी एवं पं. बैजनाथ प्रसाद मिश्र को आपने सारंगी सिखाया। इस घराने के उत्तराधिकारी पं. छोटे रामदास जी ने ख़याल एवं टप्पा गायन शैली में अपना कीर्तिमान स्थापित किया।

- **पं. धन्नू–सँवरु मिश्र जी की परम्परा –** प्राख्यात् ध्रुपद गायक धन्नूजी–सँवरु जी मूलतः बेतिया के निवासी थे तथा संभवतः जयकरन जी के समकालीन थे। पं. छोटे रामदास जी को आप लोगों से ध्रुपद गायन शैली की भी शिक्षा प्राप्त हुई।

- **पं. बख्तावर मिश्र जी की परम्परा –** बख्तावर मिश्र जी मूलतः बेतिया के निवासी थे तथा काशी नरेश के दरबारी गायक के रूप में संगीत सेवारत रहे। आप ध्रुपद गायक होने के साथ ही साथ उत्कृष्ट जलतरंग वादक भी थे।

- **पं. दरगाही मिश्र जी की परम्परा –** आपको गायन की शिक्षा पं. शिव सहाय मिश्र जी से प्राप्त हुई तथा तबले की शिक्षा आपने अपने पिताजी से प्राप्त की। दरगाही जी के पूर्वज श्री रामशरण मिश्र बनारस बाज के प्रवर्तक पं. रामसहाय जी के शिष्य थे। पं. दरगाही मिश्र जी गायन एवं तबले के साथ–साथ बीन, सितार, सारंगी आदि वाद्यों के भी अच्छे वादक थे।

- **पं. मथुरा जी मिश्र जी की परम्परा –** आप ध्रुपद, धमार, ख़याल, टप्पा, ठुमरी आदि शैलियों के प्रसिद्ध गायक थे तथा काशी के विजय नगर राजदरबार में कलावन्त पद पर नियुक्त थे। आपने अपने पौत्र रामप्रसाद मिश्र (रामू जी) को संगीत की प्रारम्भिक शिक्षा दी। रामू जी अप्रतिम टप्पा–ठुमरी गायक के रूप में प्रसिद्ध हुए। मथुरा जी की वंश परम्परा एवं शिष्य परम्परा में अनेक गायक, सारंगी वादक एवं तबला वादक हुए।

उपर्युक्त परम्पराओं में से अधुना कुछ परम्पराएँ लुप्तप्राय हो चुकी हैं तथा अनेक घरानों के वंशज एवं शिष्य आज भी इस घराने की गायकी को आगे बढ़ा रहे हैं। बनारस घराने के संगीत का आंकलन करने के फलस्वरूप हमें कुछ रोचक तथ्य इस प्रकार प्राप्त होते हैं–

- बनारस के अनेक संगीतज्ञ संगीत की एक से अधिक विधाओं में भी पारंगत रहे हैं। कुछ गायक–सरोद, सितार, सारंगी, वीणा तथा तबला वादन में तो कुछ वाद्य–वादक गायन में भी कुशलता रखते हैं।

- यहाँ युगल गायन की भी परम्परा पुराने समय से पीढ़ी–दर–पीढ़ी चली आ रही है। शिवा–पशुपति जी, प्रसिद्धू–मनोहर जी, शिवदास–प्रयाग मिश्र से लेकर पं. अमरनाथ– पशुपति नाथ जी तथा वर्तमान में सुविख्यात गायक पद्मभूषण पं. राजन–साजन मिश्र जी तथा उनके सुपुत्र पं. रितेश–रजनीश मिश्र जी इत्यादि अनेक युगल गायक संगीत सेवारत हैं। समय एवं जनरुचि के कारण यहाँ प्रयोगवादी दृष्टिकोण का भी विकास होने लगा है। गायन की वादन के साथ, एक वाद्य की दूसरे वाद्यों के साथ जुगलबंदी भी देखी जा सकती है। यहाँ के कलाकारों की बहुमुखी प्रतिभा के कारण इस प्रकार के अनेक प्रयोग संगीत जगत में देखने को मिलते रहे हैं।

हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत की ख़याल गायन शैली में बनारस प्रमुख घरानों में से एक है। वैसे तो सभी घरानों में रागों के आधारभूत तत्त्व जैसे– रागों का शास्त्र पक्ष, ताल इत्यादि एक जैसा ही होता

ISSN 0975-7872

है। ज्यादातर आवाज लगाने के ढंग, बंदिशों के रख–रखाव इत्यादि गायिकी के तत्त्वों से ही घराने एक–दूसरे से पृथक होते हैं। इस दृष्टि से बनारस घराने की भी कुछ विशेष विशिष्टताएँ हैं जो इसे अन्य घरानें से अलग करती हैं। जिनमें से कुछ प्रमुख इस प्रकार हैं–

- बनारस घराने की बंदिशों में साहित्य पर विशेष ध्यान दिया जाता है, तदानुरूप ही गायन–वादन किया जाता है। बंदिश के शब्दों को स्वरों के साथ इस प्रकार सजाया जाता है कि साहित्य का पूरा भाव संगीत रसिक श्रोताओं तक पहुँच सके।
- इस घराने में छूट के तानों की अपनी अलग विशेषता है। गंभीरता पूर्वक गमक की तानों के साथ अतिद्रुत की तानें बहुतायत प्रयोग की जाती हैं। ये अतिद्रुत की तानें अधिकतर तीनों सप्तकों में होती हैं।
- बनारस घराने की ख़याल गायकी में स्थायी के सिलसिलेवार बढ़त के साथ ही अंतरे का भी विस्तार किया जाता है।
- इस घराने के ख़याल में टप्पा अंग के तानों का भी प्रयोग किया जाता है। यहाँ के अनेक संगीतज्ञ जैसे– पं. बड़े रामदास जी, पं. छोटे रामदास जी पं. श्री चन्द्र मिश्र जी, पं. गणेश प्रसाद मिश्र जी, श्रीमती गिरिजा देवी जी से लेकर पं. राजन–साजन मिश्र जी इत्यादि अनगिनत संगीतकारों ने टप्पा गायन शैली की विधिवत तालीम ली एवं उसमें महारथ हासिल की। जिसके फलस्वरूप यहाँ ख़याल में टप्पे को समाविष्ट करके टप ख़याल तथा तराने में टप्पे अंग का प्रयोग कर टप तराने की अनेक बंदिशों की रचना की गई। इन विशिष्ट रचनाओं की प्रस्तुति भी यहाँ विशेष ढंग से की जाती है।
- बनारस घराने की ख़याल गायन शैली में ध्रुपद, धमार इत्यादि जैसी गंभीरता युक्त स्वर प्रयोग के साथ ही साथ पूर्वी अंग की ठुमरी की नज़ाकत एवं उसकी सरसता का रागानुसार समुचित प्रयोग हमें देखने को मिलता है।
- धैर्यपूर्वक रागों की बढ़त, धीरे–धीरे राग के स्वरों को खोलना, पेंचयुक्त सरगम तानों का प्रयोग तथा कण, खटका, मुर्की इत्यादि का समुचित प्रयोग इस घराने की विशेषता है।
- राग एवं बंदिशों में आवश्यकतानुसार सौंदर्यपूर्ण नरम आवाज लगाव से लेकर खुले एवं जोरदार आवाज़ का प्रयोग इस गायकी में प्रदर्शित होता है।
- यहाँ की ख़याल गायकी में तिहाइयों का भी प्रयोग किया जाता है। विलम्बित तथा अतिविलम्बित ख़याल में भी सरगमों एवं बोलों की तिहाई ली जाती है। ऐसी तिहाइयो के लिए कलाकारों को लय–ताल का पूर्णज्ञान होना अति आवश्यक है। विलम्बित के साथ–साथ मध्य लय एवं द्रुत ख़याल में भी तिहाइयाँ करने का अपना एक अलग महत्त्व है। किसी भी ताल के किसी भी मात्रे से तिहाइयों की उपज की जाती है जो कि सुनने में अत्यंत रोचक एवं आकर्षक लगती है।

- रागों के प्रस्तुतीकरण में समय एवं अवसर पर भी विशेष ध्यान दिया जाता है। वर्षा ऋतु में मल्हार के रागों के साथ कजरी का गायन होता है। इसी प्रकार प्रत्येक अवसरों पर आधारित ख़याल की बंदिशों को गाने के पश्चात लोकशैलियों (होली, चैती, बारहमासा, घाटो, पूर्वी) का गायन–वादन प्रचलित है।

बनारस घराने के गायकी की विशेषताएँ

पं. राजन मिश्र जी से साक्षात्कार के आधार पर प्राप्त जानकारी के अनुसार बनारस घराने की गायकी की विशेषताएँ –

- बनारस घराने के ख़याल में बंदिशों के कहन का विशेष महत्त्व है। सर्वप्रथम साहित्य को जीने की कला बनारस घराने में सिखाई जाती है। तत्पश्चात् उस साहित्य के भावानुरुप ही रागों को सौन्दर्यपूर्ण ढंग से प्रस्तुत किया जाता है।

- जिस लय की जो रचना है उसी लय में उसका गायन किया जाता है। मध्य लय की बंदिश को मध्य लय में इसी प्रकार द्रुत लय की बंदिश को द्रुत लय में गाया जाता है। उदाहरण स्वरूप राग भीमपलासी में निबद्ध एक रचना है, जिसके बोल इस प्रकार है–

स्थायी– प्रीतम की पाँती बाँचरे।
ए हो मोरे बीर बभनवा।।

अंतरा– जब से गये मोरी सुधहु न लीन्ही।
किन सौतन विरमाए पियरवा।।

उक्त रचना की प्रस्तुति यदि हम द्रुत लय में करते हैं तो साहित्य में जो भाव हमें परिलक्षित हो रहा है उसके अनुरूप गायन संभव नहीं है। अतः इस रचना को मध्य लय में ही प्रस्तुत किया जाता है। बनारस घराने में ख़याल की कुछ रचनाओं को विलम्बित एवं द्रुत दोनों लयों में गाया जाता है।

- रचनाओं के भावानुरूप ही बनारस में तबले की प्रस्तुति की जाती है। जैसा कि हम सभी जानते हैं कि बनारस घराने का तबला वादन के क्षेत्र में भी महत्त्वपूर्ण योगदान है। गायक अपने रागों से जिस रस की अभिव्यक्ति करता है, उसी रस में तबला संगत की जाती है। यदि रचना वीर रस में है तो उसके साथ खुले एवं जोरदार बोलों का प्रयोग तथा यदि रचना श्रृंगार रस में है तो उसके साथ तदानुरूप ही तबला संगत अपेक्षित है। इन सभी बातों पर इस घराने में विशेष ध्यान दिया जाता है।

- जिस प्रकार राग में आलाप का विस्तार एवं बढ़त किया जाता है उसी प्रकार सरगम एवं तानों का भी विस्तार बनारस घराने की ख़याल गायकी में किया जाता है। जैसा कि हम तंत्री वाद्यों (सितार, सरोद आदि) में जोड़ सुनते हैं उसी प्रकार सिलसिलेवार तरीके से अलग–अलग लय

में सरगम का विस्तार किया जाता है। तानों को विस्तार पूर्वक गाने के लिये कुछ स्वर समूहों को मुकाम बनाकर तान किया जाता है। इस प्रकार तान करने से न केवल संपूर्ण एवं विस्तृत रागों की परिधि बढ़ती है बल्कि संकुचित एवं क्लिष्ट रागों की भी व्यापकता बढ़ जाती है। इस घराने में छन्दयुक्त तानों का प्रचुर मात्रा में प्रयोग दृष्टिगोचर होता है।

बनारस घराने की ख़याल गायकी में प्रचलित बंदिशों की विशेषताएँ–

- मुख्य रूप से बंदिशों के माध्यम से इस घराने की पहचान होती है। बनारस घराने में बंदिशों की रचनाओं का क्षेत्र अत्यन्त व्यापक है। रचनाओं में प्रयुक्त विभिन्न विषयों के आधार पर यदि हम देखें तो हमें ज्ञात होता है कि यहाँ भक्तिपरक उद्‌गार से परिपूरित काव्य बहुतायत मिलता है। चूँकि काशी प्राचीनकाल से ही धार्मिक नगरी मानी गई है। भारत वर्ष के सप्त धार्मिक नगरों में काशी को अनेक पुराणों में मान्यता प्राप्त है। अतः यहाँ मंदिरों में गायन–वादन की अतिप्राचीन परम्परा रही है। बंदिश रचनाओं में राम स्तुति, कृष्ण स्तुति, दुर्गा स्तुति, शिव स्तुति तथा सरस्वती स्तुति इत्यादि हमें देखने को मिलते हैं। साथ ही साथ यहाँ भजन गायकी का भी अपना वैशिष्ट्य है।

- विभिन्न उत्सवों, धार्मिक त्योहारों एवं पौराणिक प्रसंगों पर आधारित काव्य रचनाएँ हमें प्राप्त होती है। विभिन्न ऋतुओं में गाये जाने वाली राग की बंदिशों के साथ ही प्रत्येक ऋतुओं में गाये जाने वाली लोक शैलियाँ (कजरी, चैती, होरी, पूर्वी, घाटो इत्यादि) खूब प्रचलित हैं।

- इस घराने की बंदिशों में अधिकतर ब्रज, अवधी एवं संस्कृत भाषाओं का समावेश मिलता है। विभिन्न रस, छन्द एवं अलंकारों का भी प्रयोग हमें यहाँ की रचनाओं में देखने को मिलता है।

- इस घराने में प्रचलित रागों के साथ अप्रचलित रागों में भी अनेक रचनाएँ अलग–अलग तालों में की गई हैं जो इस घराने के वाग्गेयकारों की उत्तम काव्यकुशलता को प्रदर्शित करता है। बंदिश रचनाकारों में पं. बड़े रामदास जी, पं. छोटे रामदास जी, पं. नानक मिश्र जी, पं. श्री चन्द्र मिश्र जी, पं. गणेश प्रसाद मिश्र जी पं. हरिशंकर मिश्र जी तथा पं. राजन–साजन मिश्र जी आदि प्रमुख वाग्गेयकारों का नाम सम्मिलित है।

- बनारस घराने की बंदिशों में अनेक विशिष्ट एवं चमत्कारिक प्रयोग हमें देखने को मिलते हैं। विषम स्थान से उठने वाली बंदिशों जैसे– एकताल में तीसरी, सातवीं, आठवीं, नौवीं, दसवीं, तथा बारहवीं इत्यादि मात्रे से उठान एवं तीन ताल में पहली, दूसरी, तीसरी, चौथी, पाँचवीं, आठवीं, तेरहवीं, सोलहवीं, इत्यादि सभी सम–विषम मात्राओं से उठने वाली बंदिशें इसी प्रकार रूपक, झपताल, सूलफाकता, आड़ा चौताल, पंद्रह मात्रे की सवारी इत्यादि तालों में अनेक विशिष्ट रचनाएँ हमें देखने को मिलती हैं।

- इस घराने की बंदिशों में कई बंदिशें हमें ऐसी मिलती है, जिनमें एक से अधिक अंतरे है। इसके साथ ही साथ चतुरंग, त्रिवट की भी कई रचनाएँ हमें प्राप्त होती है।

- इसके अतिरिक्त बनारस घराने में तरानों की भी अनेक विशिष्ट रचनाएँ की गई हैं। अर्थदार तराने, त्रिवट, फारसी के बोलों से सम्मिलित अनेक तरानों की रचनाएँ इस घराने की गायकी में सुनी जाती है। तीनताल, एकताल के अतिरिक्त रूपक, झपताल, आड़ा चौताल इत्यादि अनेक तालों में तराना गायकी का प्रचलन है।

निष्कर्ष के रूप में यह कहा जा सकता है कि बनारस, जहाँ की सभ्यता, संस्कृति, धर्म, दर्शन, साहित्य एवं संगीत इतनी प्राचीन एवं समृद्ध परंपरा है, उसका उल्लेख शब्दों में नहीं किया जा सकता है। कुछ ऐसा ही अनुभव यहाँ के संगीत को भी देखने से होता है। तीनों विधाओं की विविधता विभिन्न शास्त्रीय, उपशास्त्रीय तथा लोक शैलियों में व्याप्त है। बनारस घराने की यह विशेषता संगीत जगत में अत्यन्त अनूठी मानी जाती है। इस समृद्ध परम्परा को जीवित रखने में बनारस के अनेक महान संगीतज्ञों का महत्त्वपूर्ण योगदान रहा है तथा वर्तमान में भी इस घराने की धरोहर को विभिन्न गायकों एवं वादकों द्वारा संजोया एवं संवर्धित किया जा रहा है। यह विकास की यात्रा भविष्य में भी इसी प्रकार चलती रहे, इसके लिये बनारस घराने के गुरुजनों के साथ–साथ उनके शिष्य–प्रशिष्यों का भी अत्यधिक महत्त्वपूर्ण योगदान अपेक्षित है।

संदर्भ ग्रंथ सूची–

1. चंद्र, डॉ. मोती, (1962) काशी का इतिहास, बम्बई, महाराष्ट्र; हिंदी ग्रंथ रत्नाकर प्राइवेट लिमिटेड
2. जौहरी, डॉ. रेनू (2004) भारतीय संगीतिक जगत में वाराणसी का योगदान, नई दिल्ली, दिल्ली; क्लासिकल पब्लिशिंग कंपनी
3. मिश्र, पं. कामेश्वर नाथ, (1997) काशी की संगीत परम्परा, लखनऊ, उ.प्र., भारत बुक सेंटर
4. सिंह, डॉ. अशोक कुमार, (1988) उत्तर प्रदेश के प्राचीनतम नगर, नई दिल्ली, दिल्ली; वाणी प्रकाशन

साक्षात्कार–

1. पं. राजन मिश्र एवं पं. साजन मिश्र, नई दिल्ली, 28.09.2020
2. पं. विद्याधर मिश्र, प्रयागराज, उ.प्र., 24.09.2020